ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

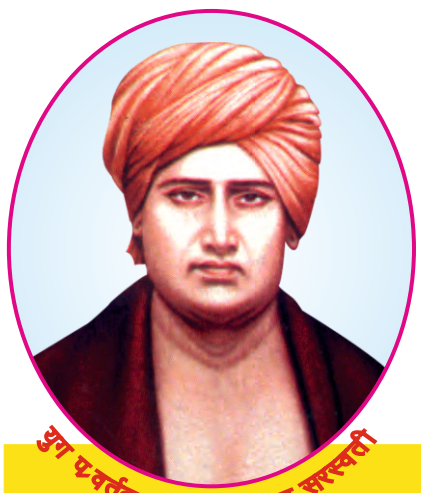

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 28 1 से 7 अक्टूबर, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 आ. कृ. 04

आर्य समाज डालीगंज, लखनऊ का शताब्दी समारोह हर्षोल्लास के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न

वैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग कर आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों को जन-जन तक पहुँचाया जायेगा

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज डालीगंज लखनऊ का शताब्दी समारोह 18 से 20 सितम्बर, 2015 तक छत्रपति शिवाजी सभागार, रामाधीन सिंह कॉलेज, निकट आई.टी. चौराहा, बाबूगंज, लखनऊ में अत्यन्त हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। इस समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, श्री आनन्द कुमार आर्य, डॉ. प्रियंवदा वेद भारती, आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ (कोलकाता), आर्य भजनोपदेशक सत्य प्रकाश आर्य, सिनेवादक पं. सीताराम शर्मा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः 8 से 9 बजे तक वैदिक यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया। इस यज्ञ की ब्रह्मा नजीबाबाद से पधारी गुरुकुल की आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेद भारती जी थी। उनके साथ आई गुरुकुल की छात्राओं मनीषा, कपाला, प्रेरणा आदि ने सामवेद गायन तथा सुमधुर भजनों के द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। समारोह के अवसर पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, वयोवृद्ध आर्य मनीषियों का सम्मान तथा शताब्दी स्मारिका विमोचन सहित अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गये थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ ध्वजारोहण से हुआ। ध्वजारोहण आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने किया। कोलकाता से पधारे भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ सिनेवादक पं. सीताराम शर्मा आदि ने अपने भजनों से समा बांध दिया। महर्षि दयानन्द के यशोगान तथा मनोहारी भजनों ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। दिल्ली से पधारे स्वामी सोम्यानन्द जी के विचारों ने श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। समारोह का कुशल संचालन आर्य विद्वान पं. दीनानाथ शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी तथा हृदयग्राही उद्बोधन से श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। स्वामी जी ने युवा वर्ग को संस्कारित करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत देश युवाओं का देश है और जिस देश का युवा वर्ग संस्कारित होता है, देश भक्त होता है, माता-पिता, गुरु का आदर करने वाला होता है वह देश निश्चित रूप से प्रगति करता है। अतः आज सबसे बड़ी आवश्यकता युवाओं को संस्कारित करने की है। हमारा युवा पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करते हुए पतन के गर्त में जा रहा है जो अत्यन्त चिन्ता का विषय है और इसे रोकना ही होगा। आर्य समाज के अधिकारी इस विषय पर चिन्तन करें और चारित्रिक शिविरों का आयोजन करके अधिक से अधिक युवाओं को उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें। स्वामी जी ने कहा कि आज जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, महिलाओं पर अत्याचार, गौहत्या, धार्मिक पाखण्ड, शोषण जैसी समस्याओं से समाज त्रस्त है अतः बन्धुओं! हमें इन समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करना होगा। इन समस्याओं से समाज को कैसे मुक्ति मिले इस पर चिन्तन करना है और फिर कार्य रूप में परिणित करना है।

स्वामी जी ने बताया कि अभी कुछ माह पूर्व हमने सम्पूर्ण हरियाणा प्रदेश में और उसके बाद हरिद्वार से लेकर मध्य प्रदेश तक की 6 प्रदेशों की विशाल जन-जागरण यात्रायें उक्त मुद्दों को लेकर निकाली थी और इस यात्रा में सैकड़ों जन सभायें की गई। प्रत्येक स्थान पर आर्यों का उत्साह देखने लायक था। लोग आर्य समाज की तरफ देख रहे हैं। अतः आर्यों उठो और योजनाबद्ध कार्यक्रम के द्वारा लोगों को जागरूक करो। स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज को ऋषि दयानन्द का आर्य समाज बनाने के लिए सामाजिक बुराईयों के

अगले पृष्ठ पर जारी है

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अश्लीलता पर शीर्षासन क्यों?

– डा. वेदप्रताप वैदिक

इंटरनेट पर दिखाई जाने वाली अश्लील वेबसाइटों के बारे में सरकार ने शुरू में बहुत ही अच्छा रवैया अपनाकर 857 अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन फिर उसने सिर्फ बच्चों की अश्लील वेबसाइटों पर अपने प्रतिबंध को सीमित कर दिया। सूचना एवं तकनीकी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने इसकी घोषणा की। सरकार ने यह शीर्षासन क्यों किया?

सरकार ने यह शीर्षासन किया, अंग्रेजी अखबारों और चैनलों की हायतौबा के कारण! किसी की हिम्मत नहीं हुई कि वह अश्लीलता के समर्थकों का विरोध करे। इससे साफ जाहिर होता है कि स्वतंत्र भारत में भी दिमागी गुलामी की जड़ें कितनी गहरी और हरी हैं। आप यदि अंग्रेजी में कोई अनुचित और ऊटपटांग बात भी कहें, तो वह मान ली जाएगी। मुझे आश्चर्य है कि संसद और विधानसभाओं में भी किसी नेता ने इस मुद्दे को नहीं उठाया। देश में संस्कृति और नैतिकता का झंडा उठाने वाली संस्थाओं–राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आर्यसमाज और गांधी–संस्थाओं की चुप्पी भी आश्चर्यजनक है। सारे साधु–संतों, मुल्ला–मौलवियों, ग्रंथियों और पादरियों का मौन भी चौकाने वाला है। शायद इसका कारण यह भी हो सकता है कि इन्हें पता ही न हो कि इंटरनेट पोर्नोग्राफी क्या होती है। यह तो इंदौर के वकील कमलेश वासवानी की हिम्मत है कि उन्होंने इस मामले को अदालत में लाकर अश्लील वेबसाइटों के माथे पर तलवार लटका दी है।

यदि जनता के दबाव के आगे कोई सरकार झुकती है तो इसे मैं अच्छा ही कहूंगा। इसका मतलब यही है कि सरकार तानाशाह नहीं है। भूमि–अधिग्रहण विधेयक पर भी सरकार ने लचीले रवैए का परिचय दिया है, लेकिन अश्लीलता के सवाल पर क्या सरकार यह कह सकती है कि वह लोकमत का सम्मान कर रही है? दस–बीस अंग्रेजी अखबारों में छपे लेखों और लगभग दर्जन भर चैनलों की हायतौबा को क्या 130 करोड़ लोगों की राय मान लिया जा सकता है? इसके पहले कि सरकार अपने सही और साहसिक कदम से पीछे हटती, उसे एक व्यापक सर्वेक्षण करवाना चाहिए था, सांसदों की एक विशेष जांच समिति बिठानी चाहिए थी, अपने मार्गदर्शक मंडल से सलाह करनी चाहिए थी। ऐसा किए बिना एकदम पल्टी खा जाना किस बात का सूचक है? एक तो इस बात का कि वह सोच–समझकर निर्णय नहीं लेती और जो निर्णय लेती है, उस पर टिकती नहीं है यानी उसका आत्म–विश्वास डगमगा रहा है। यदि मोदी सरकार का यह हाल है तो देशवासी अन्य सरकारों से क्या उम्मीद कर सकते हैं?

अब संघ स्वयंसेवकों की यह सरकार अपनी पीठ खुद ठोक रही है कि हमने वेबसाइट ऑपरेटरों को नया निर्देश दिया है कि वे बच्चों से संबंधित अश्लील वेबसाइटों को बंद कर दें। बेचारे ऑपरेटर परेशान हैं। वे कहते हैं कि कौन–सी वेबसाइट बाल–अश्लील है और कौन–सी वयस्क–अश्लील हैं, यह तय करना मुश्किल है। सिर्फ बाल–अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध को अदालत और सरकार दोनों ही उचित क्यों मानती हैं? उनका कहना है कि इसके लिए बच्चों को मजबूर किया जाता है। वह हिंसा है। लालच है। मैं पूछता हूं कि वयस्क वेबसाइटों पर जो होता है, वह क्या है? ये वयस्क वेबसाइटें क्या औरतों पर जुल्म नहीं करतीं?औरतों के साथ जितना वीभत्स और घृणित बर्ताव इन वेबसाइटों पर होता है,उसे अश्लील कहना भी बहुत कम करके कहना है। पुरुष भी स्वेच्छा या प्रसन्नता से नहीं, पैसों के लिए अपना ईमान बेचते हैं। उन सब स्त्री–पुरुषों की मजबूरी,क्या उन बच्चों की मजबूरी से कम है? हमारी सरकार के एटार्नी जनरल अदालत में खड़े होकर बाल–अश्लीलता के खिलाफ तो बोलते हैं, जो कि ठीक है, लेकिन महिला–अश्लीलता के विरुद्ध उनकी बोलती बंद क्यों है? यह बताइए कि इन चैनलों को देखने से आप बच्चों को कैसे रोकेंगे? इन गंदे चैनलों के लिए काम करने वाले बच्चों की संख्या कितनी होगी? कुछ सौ या कुछ हजार? लेकिन इन्हें देखने वाले बच्चों की संख्या करोड़ों में है। क्या आपको अपने इन बच्चों की भी कुछ परवाह है या नहीं? सारे अश्लील वेबसाइटों पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन पैसे की खदान है। यह पैसा सरकारों को भी बंटता है। सरकारें ऐसे वेबसाइटों को इसलिए भी चलाते रहना चाहती हैं कि जनता का ध्यान बंटा रहे। उसके दिमाग में बगावत के बीज पनप न सकें। रोमन साम्राज्य के शासकों ने अपनी जनता को भरमाने के लिए हिंसक मनोरंजन के कई साधन खड़े कर रखे थे। पश्चिम के भौतिकवादी राष्ट्रों ने अपनी जनता को अश्लीलता की लगभग असीम छूट इसीलिए दे रखी है कि वे लोग अपने में ही मगन रहें, लेकिन इसके भयावह दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। हिंसा और दुष्कर्म के जितने अपराधी अमेरिकी जेलों में बंद हैं, दुनिया के किसी देश में नहीं हैं।

यह तर्क बहुत ही कमजोर है कि सरकार का काम लोगों के शयन–कक्षों में ताक–झांक करना नहीं है। लोग अपने शयन–कक्ष में जो करना चाहें, करें। इससे बढ़कर गैर–जिम्मेदाराना बात क्या हो सकती है? क्या अपने शयन–कक्ष में आप हत्या या आत्महत्या कर सकते हैं? क्या दुष्कर्म कर सकते हैं? क्या मादक–द्रव्यों का सेवन कर सकते हैं? ताक–झांक का सवाल ही तब उठेगा, जबकि आप गंदी वेबसाइटें छुप–छुपकर देख रहे हों। जब गंदी वेबसाइटों पर प्रतिबंध होगा तो कोई ताक–झांक करेगा ही क्यों? उसकी जरुरत ही नहीं होगी। हर शयन–कक्ष की अपनी पवित्रता होती है। वहां पति और पत्नी के अलावा किसका प्रवेश हो सकता है? यदि आप गंदी वेबसाइटों को जारी रखते हैं तो उनसे आपका चेतन और अचेतन इतने गहरे में प्रभावित होगा कि वह कमरों की दीवारें तोड़कर सर्वत्र फैल जाएगा। यह अश्लीलता मनोरंजक नहीं, मनोभंजक है। यही हमारे देश में दुष्कर्म और व्याभिचार को बढ़ा रही है। यदि यह अश्लीलता अच्छी चीज है तो इसे आप अपने बच्चों, बहनों और बेटियों के साथ मिलकर क्यों नहीं देखते?आपने सिनेमा पर सेंसर क्यों बिठा रखा है? आप लोगों को पशुओं की तरह सड़कों पर ऐसा करने की अनुमति क्यों नहीं देते? यह तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सर्वोच्च उपलब्धि होगी! अश्लील पुस्तकें तो बहुत कम लोग पड़ पाते हैं। अश्लील वेबसाइटें तो करोड़ों लोग देखते हैं। आपको पहले किस पर प्रतिबंध लगाना चाहिए?

इन अश्लील वेबसाइटों की तुलना खजुराहो और कोणार्क की प्रतिमाओं तथा महर्षि वात्स्यायन के कामसूत्र से करना अपनी विकलांग बौद्धिकता का सबूत देना है। कामसूत्र काम को कला के स्तर पर पहुंचाता है। उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अंग बनाता है। वह काम का उदात्तीकरण करता है जबकि ये अश्लील वेबसाइटें काम को घृणित, फूहड़, यांत्रिक और विकृत बनाती हैं। काम के प्रति भारत का रवैया बहुत खुला हुआ है। वह वैसा नहीं है, जैसा कि अन्य देशों का है। उन संपन्न और शक्तिशाली देशों को अपनी दबी हुई काम–पिपासा अपने ढंग से शांत करने दीजिए। आप उनका अंधानुकरण क्यों करें?

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य समाज डालीगंज, लखनऊ का शताब्दी समारोह हर्षोल्लास के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न

विरुद्ध जोर–शोर से कार्य करने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि हम सार्वदेशिक सभा के माध्यम से सारे देश में जन–जागरण यात्रायें, गोष्ठियाँ, सम्मेलन करके आम जनता को जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम सब एकजुट होकर आर्य समाज के कार्य करें तो वह दिन दूर नहीं कि हम वेद की ज्योति से समूचे विश्व को प्रकाशित और सुवासित कर पायेंगे। स्वामी जी ने अभी हाल ही में अपने अमेरिका प्रवास के दौरान न्यूयार्क एवं न्यूजर्सी में हुई महत्त्वपूर्ण बैठकों का विवरण भी श्रोताओं से साझा किया। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य हम करना चाहते हैं और उसकी तैयारी पूर्ण कर ली गई है। स्वामी जी ने कहा कि आज के इस वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग कर आर्य समाज के कार्य को बढ़ाने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर श्री जलेश्वर मुनि व ओजोमित्र शास्त्री को अंगवस्त्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। समारोह में देश एवं प्रदेश की विभिन्न समाजों से भारी संख्या में आर्यजन उपस्थित थे। इस अवसर पर शताब्दी स्मारिका का विमोचन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। स्मारिका का सम्पादन पं. दीनानाथ शास्त्री ने किया।

आर्य समाज डालीगंज लखनऊ के प्रधान श्री प्रेमशंकर शुक्ल ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा मंत्री आनन्द चौधरी, कोषाध्यक्ष डॉ. अरविन्द नाथ पाण्डे अधिष्ठाता सेवक राम आर्य ने समारोह को सफल बनाने में सक्रिय योगदान प्रदान किया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

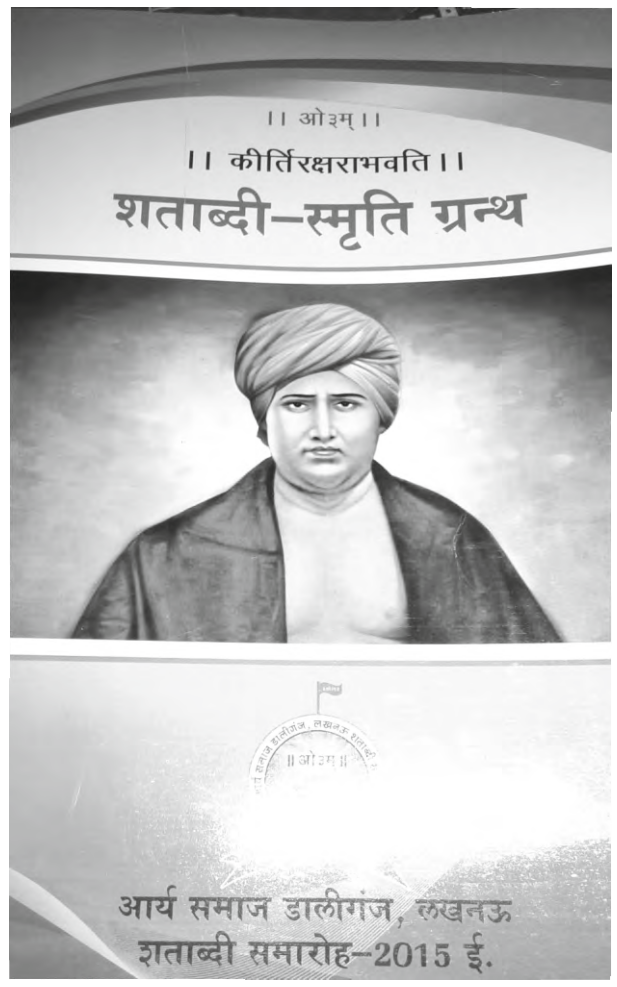

आओ चुकाएँ ऋण माता-पिता का

- अशोक आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने प्रमुख ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं - जिस-जिस **कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पितादि प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जाएँ, उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए है, मृतकों के लिए नहीं।**

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वे अपने माता-पितादि की सेवा बड़े यत्न से करे।

ऋषिवर इसी समुल्लास में आगे बुजुर्गों की सेवा के बारे में लिखते हैं -

'..... उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी, वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

आपने देखा होगा कि भारतीयों/हिन्दुओं में तर्पण तथा श्राद्ध का प्रकार आजकल अलग प्रकार से प्रचलित हो गया है। मृत्योपरान्त मृतक की आत्मा की तृप्ति के नाम पर मृतक भोज, शैय्यादान या किसी पवित्र नदी में अस्थियाँ प्रवाहित करना कर्त्तव्य पूर्ति मान लिया जाता है। वर्ष में एक बार श्राद्ध पक्ष आता है। कहा जाता है कि इस काल में तथाकथित ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणादि से तृप्त करने से पितर तृप्त हो जाते हैं। यह पूर्णतया अवैज्ञानिक धारणा है, मिथ्या, कपोलकल्पित तथा धर्म के नाम पर मूर्ख बनाकर ठगने का प्रत्यक्ष उदाहरण है। वस्तुत: श्राद्ध और तर्पण जीवित बुजुर्गों का ही होता है। पितर का तात्पर्य ही जीवित माता पितादि से है। अगर जीवित रहते माँ-बाप को सुख न दिया तो मरे पश्चात् गंगादि में भस्मी प्रवाहित करना स्वयं को मूर्ख बनाना मात्र है। किसी ने इस हालात पर टिप्पणी की है -

'जियत पिता से दंगम दंगा, मरे पिता पहुँचाए गंगा।'

अगर आप जीवन में संतोष तथा उन्नति चाहते हैं तो माता-पितादि के भरपूर, हृदय से निकले आशीर्वाद के बिना संभव नहीं है।

आज अनेकानेक कारणों से माता-पिता को अपना बुढ़ापा विपन्न स्थिति में, एकाकी काटना पड़ रहा है। इसीलिए Old Age Homes की संख्या बढ़ रही है। सारा जीवन, सारी इच्छाएँ, उमंगे बच्चों के भविष्य पर कुर्बान कर देने के पश्चात् जब वे अपने को दीन-हीन आश्रित अवस्था में पाते हैं तो अपने जीवन को अभिशप्त समझते हैं। वे एकाएक यह समझने में असमर्थ हो जाते हैं कि वे इस संसार में क्यों हैं। उनकी सार्थकता क्या है। इससे दुखद स्थिति कोई नहीं हो सकती।

कुछ वर्ष पूर्व अमिताभ जी की एक फिल्म आयी थी बागवाँ अपनी सारी खुशी, सारा धन वे बच्चों को बनाने में खर्च कर देते हैं। अवकाश प्राप्ति के पश्चात् जब वे आत्ममुग्ध होते हैं कि अब बच्चे प्यार और सम्मान से उन्हें रखेंगे तथा जिन्दगी के सबसे सुन्दर पल अब वे चिन्तामुक्त होकर बितायेंगे तो बेटों के व्यवहार से उनके सपने चूर-चूर हो जाते हैं। हमें फिल्म का सबसे मार्मिक दृश्य यह लगा कि जब पोते की शरारत से अमिताभ जी का चश्मा टूट जाता है, तब जिस प्रकार से चीजों को संभालकर रखने की सलाह और मंहगाई की मार की बात उन्हें कही जाती है उस समय कोई पिता क्यों न मृत्यु को जीवन से बेहतर समझेगा? काश पुत्र उस समय तनिक उन पलों को याद कर लेता जब पिता द्वारा लाया गया खिलौना टूट गया और उसके आँसू पोंछकर उसकी जिद पर रात के समय भी बड़ी मुश्किल से एक दुकान खोज, पिता नया खिलौना लाया। पुन: खिलौना टूटने पर पुन: लाया। पिता को पुत्र की आँखों में एक आँसू बर्दाश्त नहीं। व्यर्थ है उस पुत्र का जीवन जो माता-पिता की आँखों में एक अश्रु का भी कारण बने।

ऊपर हमने महर्षिवर के दो उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिनमें से प्रथम में 'प्रसन्न किए जाएँ' और द्वितीय में 'उनका आत्मा तृप्त' को हमने गहरी स्याही में किया है। वह इसलिए कि कुछ लोग समझते हैं कि धन खर्च करने से उनकी कर्त्तव्य पूर्ति हो जाती है माता-पिता के वस्त्र, भोजन, औषधोपचार आदि पर खुले दिल से व्यय करने पर भी यह आंशिक ही कहा जायेगा। आत्मा के तृप्त होने के लिए कुछ और भी आवश्यक है।

इसे समझने हेतु यदि माँ-बाप अपने बच्चे को बड़ा करने के विभिन्न प्रसंगों की वीडियो बना लें तो अधिक आसानी से समझ सकेंगे। उन्हें दिखेगा वह दृश्य जब वो काम पर जा रहे हैं, पहले ही देर हो चुकी है पर बालक पिता के पास जाने को मचल गया। असंभव को संभव बनाते हुए वह कुछ मिनट बालक को देता है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह ऑफिस कार्य के नोट्स बना रहा है। बालक खेलता हुआ आता है, स्याही की दवात गिर जाती है सारे नोट्स खराब हो जाते हैं। बच्चे को डांट पड़ती है। बच्चा रोने लगता है। पिता सब कार्य छोड़ बच्चे को चुप कराने लगता है। गलती बच्चे की थी पर पिता Sorry कह रहा है। दुबारा से सारे नोट्स बना रहा है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह सहयोगियों के साथ गम्भीर चर्चा में निमग्न है। मना करने पर भी बालक बार-बार उस कमरे में आ जाता है। बार-बार का व्यवधान भी उसे उत्तेजित नहीं करता। उसे दिखेगा वह दृश्य जब छत पर वह पुत्र को बताता है कि वह मुंडेर पर जो पक्षी बैठा है उसे कौआ कहते हैं। बालक बार-बार पूछता है पिता खुश होकर बार-बार बताता है। झल्लाता नहीं।

बस ऐसा ही संयम, प्यार, उल्लास, सम्मान, आत्मीयता से भरा व्यवहार पितरों की आत्मा को तृप्त करता है। यही उनकी अपेक्षा है। वे वय बढ़ने के साथ कुछ-कुछ बालक सदृश होते चले जाते हैं, इस मनस्थिति को ध्यान में रखना होगा।

यहाँ प्रख्यात उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द्र लिखित किशोरावस्था में पठित एक कहानी 'बूढ़ी काकी' का स्मरण हो रहा है। इसकी प्रथम पंक्ति में मुंशी जी ने वृद्धावस्था का पूरा मनोविज्ञान समाहित कर दिया है।

'बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।' घर में समारोह है। काकी को कमरे में बन्द रहने के सख्त निर्देश हैं। पल-पल काकी क्या सोचती है? अब कचौरी तल रही होंगी, कड़ाही में से कैसी छन-छन कर रही होंगी आदि वृद्धावस्था की अभिलाषा को व्यक्त करने में समर्थ है। कोई 'बूढ़ी काकी' कोठरी में बन्द न हो यह आदर्श स्थापित करना होगा। हर समारोह में, हर पल में, वे आपके संग हों। उपेक्षा वृद्धों को सह्य नहीं।

आप कभी दो घड़ी उनके पास बैठ सुख-दुख की बात करें अपनी उलझनें भी बताएँ, चाहे वे न भी समझें। तब देखें कि वे स्वयं को अभी भी मूल्यवान समझेंगे, ड्राइंग रूम में रखा शो-पीस नहीं। इस मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है।

काश! हर बालक नन्हें हामिद के संस्कार लेकर बड़ा हो। माता ने कष्टपूर्वक कुछ 'आने' (रुपये का भाग) उसे इसलिए दिए कि वह मेले में जाकर अपने लिए चिरअभिलाषित खिलौना ले आवे। पर हामिद लेकर आता है लोहे का चिमटा ताकि माँ की अंगुलियाँ रोटी बनाते समय जले नहीं। यही विशुद्ध भारतीयता है, जिसे हमें जीवित रखना है।

वेद में कहा है :-

यदापिपेष मातरं पुत्र: प्रमुदितो धयन्।
एतत्तदग्ने अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया।
सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त।
विपृच स्थवि मा पाप्मना पृङ्क्त। यजु. 19.11

जैसा माता-पिता पुत्र को पालते हैं, वैसे पुत्र को माता-पिताकी सेवा करनी चाहिए। सबको इस बात पर ध्यान देना चाहिए, कि हम माता-पिता की सेवा करके पितृऋण से मुक्त होवें। जैसे विद्वान् धार्मिक माता-पिता अपने सन्तानों को पापाचरण से हटाकर धर्माचरण में लगावें, वैसे सन्तान भी अपने माता-पिता के प्रति ऐसा वर्ताव करें॥

मो.:-9314235101, 9001339836

पिता का प्यार

पिता जीवन है, संबल है, शक्ति है,
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है॥
पिता अंगुली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी कुछ मीठा है, तो कभी कुछ खारा है॥
पिता पालन-पोषण है, परिवार का अनुशासन है,
पिता भय से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
छोटे से परिन्दे का बड़ा आसमान है॥
पिता अप्रदर्शित, अनन्त प्यार है,
पिता है तो बच्चों का इंतजार है॥
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं,
पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने हैं॥
पिता से परिवार में प्रतिपल राग है,
पिता से ही माँ की बिन्दी और सुहाग है॥
पिता परमात्मा की जगत् के प्रति आसक्ति है,
पिता गृहस्थाश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है॥
पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति है,
पिता रक्त में दिए हुए संस्कारों की मूर्ति है॥
पिता एक जीवन को जीवन दान है,
पिता दुनिया दिखाने का अहसास है॥
पिता सुरक्षा है, अगर सिर पर हाथ है,
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है॥
तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो,
पिता का अपमान नहीं, अभिमान करो॥
क्योंकि माँ-बाप की कमी कोई पाट नहीं सकता,
ईश्वर भी उनके आशीषों को काट नहीं सकता॥
दुनिया में किसी भी देवता का स्थान दूजा है,
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है॥
विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्रा सब व्यर्थ है,
यदि बेटे के होते हुए माँ-बाप असमर्थ हैं॥
वो खुशनसीब होते हैं, माँ-बाप जिनके साथ होते हैं,
क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हजारों हाथ होते हैं॥

साभार- वैदिक रवि

भारतीय समाज के सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधार में–

स्वामी दयानन्द का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

– डॉ० चन्द्रपाल सिंह

सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधारः–

परिवर्तन समाज का एक अनिवार्य नियम है। आदिकाल से ही समाज में परिवर्तन होते रहे हैं, चाहे मनुष्य ने उन हो रहे परिवर्तनों के प्रति संवेदनशीलता दिखाई या नहीं। भारतीय समाज भी परिवर्तन के इस नियम से अछूता नहीं रहा, परन्तु शताब्दियों की राजनैतिक पराधीनता के कारण इन परिवर्तनों के प्रति उसमें कुछ असंवेदनशीलता आ गई। इसके परिणामस्वरूप भारतवासियों को दुर्बलता, दरिद्रता, हीनभावना तथा अन्य विकारों का शिकार बनना पड़ा। राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक उत्पीड़न एवं आत्मबोध के अभाव ने भारतीय समाज में बहुत–सी ऐसी कुण्ठाओं को जन्म दिया जिनका सहज उन्मूलन सम्भव नहीं था।

विदेशी शासन से, चाहे वह मुस्लिम रहा हो या ब्रिटिश, उत्पन्न पराजय–भाव ने भारत के विशाल हिन्दू समाज के धार्मिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों को अपूरणीय क्षति पहुँचायी। सहस्राब्दियों पूर्व के वैदिक, औपनिषदिक, रामायण तथा महाभारतकालीन समाज द्वारा दी गयी स्वस्थ चिन्तन व संस्कार युक्त परम्परा अतीत की वस्तु बनकर रह गयी जो केवल पुस्तकों तथा कथाओं तक सीमित रही। भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा तथा धर्म और समाज के बीच असन्तुलन उत्पन्न होने लगा। इस स्थिति का समाज के कुछ प्रभावशाली लोगों ने अनुचित रूप से उपयोग किया तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, नैतिकता के नाम पर मिथ्या अन्धविश्वास, श्रम तथा कार्य–विभाजन के नाम पर विशेष वर्गों के शोषण का प्रचार किया। इसके परिणामस्वरूप समाज में सर्वत्र संकीर्णता, अनुदारता तथा जड़ता फैलने लगी जिसने बाल–विवाह, नारी–स्वाधीनता का अपहरण विधवाओं पर अत्याचार, ऊँच–नीच की भावना पर आधारित छूत–अछूत में विभाजन, बहु–विवाह प्रचलन, दलित व निम्न वर्ग पर अत्याचार, मांसाहार व मद्य–प्रयोग को धर्म व संस्कृति से जोड़ना आदि सामाजिक बुराईयों को जन्म दिया। ये सामाजिक बुराईयाँ व कुरीतियाँ भारतीय समाज में घुन की तरह लगीं तथा किसी समय के सुदृढ़, स्वस्थ व प्रगतिशील भारतीय समाज को इतना जर्जर व खोखला बना दिया कि वह विदेशी आक्रमण तथा परकीय अत्याचारों का सामना करने में असमर्थ हो गया। भारतीय समाज की इस अधोगति तथा सामाजिक विघटन के लिए बाह्य शक्तियों के साथ–साथ हिन्दू समाज में आये मिथ्या विश्वास, कुरीतियाँ व कुप्रथायें, रूढ़िग्रस्त व जड़ विश्वास भी जिम्मेदार थे! यह किसी समाज की वह अवस्था थी जहाँ उसमें परिवर्तन लाने के लिए बड़े स्तर पर समुदाय के मौलिक मूल्यों व सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करना आवश्यक हो गया था।

समाज के पतन को रोकने के लिए समस्त समुदाय की जीवनधारा में परिवर्तन, व्यक्तियों एवं समूहों की आवश्यकताओं को जानकर उनका अध्ययन व विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायता करना ही समाज–सुधार का उद्देश्य है तथा समाज–सुधार की एक वैज्ञानिक विधि है। स्वामी दयानन्द ने एक धर्म–संशोधक व धर्म–व्याख्याता के साथ–साथ एक समाजशास्त्री के रूप में भारतीय समाज की इस अवस्था को पढ़ा, जाना और उसे सुधारने का प्रयत्न किया।

समाज-सुधार क्या है?

समाज–सुधार सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख अभिकरण है जिससे समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, बुराईयों व कुरीतियों को समाप्त करने के लिए समाज को अज्ञानता व अन्धकार से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। समाज–सुधार का मुख्य उद्देश्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है, एक ऐसा परिवर्तन जिससे समुदाय के मौलिक मूल्य व संस्थाएं प्रभावित होती हैं। समाज–सुधार द्वारा समस्त समुदाय की जीवन–धारा में परिवर्तन लाने के लिए आन्दोलन चलाए जाते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों व कुप्रथाओं को दूर कर सामाजिक व्यवस्था को वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल बनाना होता है जिससे समाज प्रगति कर सके।

स्वामी दयानन्द के समाज-सुधार में वैज्ञानिक आधार

भारतीय समाज में हो रहे नकारात्मक परिवर्तनों ने महर्षि दयानन्द को बहुत गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने भारतीय समाज के धार्मिक दृष्टिकोण के साथ–साथ उसकी सामाजिक परिस्थितियों तथा एक साधारण व्यक्ति की व्यथाओं व परेशानियों का वैज्ञानिक अन्वेषण किया। इसीलिए स्वामी जी द्वारा किये गये समाज–सुधार चाहे वह नारी–उत्थान के विषय में हो या हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों व कुप्रथाओं अथवा मूर्तिपूजा या कर्मकाण्डों का खण्डन हो, सभी वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसे गये। भारतीय समाज के पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द के योगदान में जहाँ धर्म–सुधार एक आधार था वहीं इस समाज व मनुष्य की सामाजिक मनःस्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन तथा सोच के द्वारा इसमें परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयत्न भी।

उन्नीसवीं सदी में ही भारतीय समाज की क्षति को

रोकने के लिए स्वामी जी ने एक समाजशास्त्री की भूमिका निभाई तथा समाज को सशक्त बनाने का प्रयत्न किया। उनके समाज–सुधार–सम्बन्धी कार्य तत्वज्ञान और यथार्थता के सिद्धान्तों पर आधारित थे जिनमें मानव–समाज की छोटी से छोटी विकृति की ओर भी ध्यान दिया गया। शिवरात्रि के पर्व पर शिव प्रतिमा का चूहे द्वारा किये गये अपमान की एक साधारण प्रतीत होने वाली घटना ने न केवल स्वामी दयानन्द के जीवन को असाधारण मोड़ दिया अपितु भारत के धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक जगत् में क्रान्ति का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ। यह ईश्वर–सम्बन्धी अशुद्ध विचारों के विषय में उनका पहला कुठाराघात था।

स्वामी जी के समाज–सुधार में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे समाज में परिवर्तन लाने के लिए मनुष्य को अपनी बुद्धि, विवेकशक्ति तथा चिन्तन–प्रणाली का प्रयोग करने के लिए कहते थे तथा उसके लिए उसे उचित वातावरण भी देने का प्रयत्न करते थे। यह उनके प्रगतिशील विचारों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। यहाँ मैं १ जुलाई १८७७ को प्रकाशित 'बिरादरे हिन्द' में स्वामी जी के विषय में छपे एक लेख को उद्धृत करना चाहता हूँ जिसमें उनके उदार, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया गया है– '' ..... उनके विचार प्रायः उदार तथा अधिकांश विचार इस समय के विद्वतापूर्ण विचारों के अनुकूल हैं। मस्तिष्क उनका अत्यन्त प्रगतिशील प्रतीत होता है। इस व्यक्ति के हृदय में राष्ट्रीय सहानुभूति और राष्ट्रीय सुधार का बहुत बड़ा उत्साह स्पष्ट दिखाई देता है। धार्मिक सुधार की दृष्टि से यह व्यक्ति मूर्तिपूजा का बहुत बड़ा शत्रु है और उन लोगों में से है जो इन दिनों मूर्तिपूजा को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, इस व्यक्ति को इस समय का बहुत बड़ा मूर्तिभंजक कहें तो अनुचित न होगा। जहाँ तक धार्मिक सुधारों का प्रश्न है, ब्रह्म–समाज भी सिद्धान्त–रूप में मूर्तिपूजा को दूर करना और इस संसार में ईश्वरोपासना का प्रचार करना चाहता है। इसलिए उसका तो यह व्यक्ति एक देवदूत की भांति सिद्ध होगा। इसकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। यह व्यक्ति केवल धार्मिक सुधार का ही अभिलाषी नहीं है, अपितु समस्त जातीय बुराईयों के सुधार को दृष्टि में रखता है, जैसे देश में फैल रहा बाल्यावस्था में विवाह आदि। वह स्त्रियों की शिक्षा और उनकी स्वतन्त्रता का विशेष रूप से इच्छुक है और उसकी यह भी सम्मति है कि जब तक उनमें शिक्षा न फैलेगी तब तक उन्हें अपनी कैद से छुटकारा प्राप्त न होगा, और तब तक इस देश में किसी स्पष्ट उन्नति की आशा करना व्यर्थ है। सारांश यह है कि जाति से अविद्या और पक्षपात को दूर करना, विद्या का प्रचार करना और सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करना और उसे साधारण सभ्यता के रूप में लाकर एक श्रेष्ठ नमूना बनाने का यत्न करना, इस व्यक्ति का सामान्य और विशेष उद्देश्य है।''

– बाल-विवाह का वैज्ञानिक आधार पर विरोध

स्वामी जी के समाज–सुधार के कार्य उनके द्वारा समाज के गहरे अध्ययन पर आधारित थे। यह अध्ययन समाज की वास्तविक परिस्थितियों अर्थात् सत्य पर आधारित था और सत्य के विषय में उनके विचार बहुत स्पष्ट थे। अपनी प्रमुख कृति 'सत्यार्थप्रकाश' में स्वामी जी ने सत्य के विषय में कहा है कि जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना मेरे इस ग्रन्थ का प्रयोजन है। उन्होंने यह भी कहा है कि वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाशन करता है। परन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। बाल–विवाह जैसी कुप्रथा का विरोध उन्होंने उस समय की सामाजिक स्थितियों की यथार्थता को स्वीकारते हुए किया। उन्हें भली–भाँति ज्ञात था कि समाज का एक बड़ा वर्ग इस प्रथा के विरोध को उचित नहीं मानेगा, परन्तु मनुष्य के विकास में बाधक किसी भी प्रकार की प्रथा को वे स्वीकार नहीं कर सकते थे, क्योंकि वह सत्य के मार्ग में बाधक थी और मनुष्य के शरीर की संरचना और उसका विकास स्वामी दयानन्द ने आयुर्वेद के ग्रन्थों–चरक आदि से वैज्ञानिक आधार पर यह जान लिया था कि किस आयु में स्त्री, पुरुष में परिपक्वता आती है। इसलिए उनका दृढ़ विश्वास था कि बाल–विवाह जैसी कुप्रथायें स्वस्थ मनुष्य और स्वस्थ समाज के विकास में बाधक हैं। बाल–विवाह का विरोध करने के पीछे एक वैज्ञानिक आधार यह भी था कि मनुष्य में प्रजनन–क्षमता तथा प्रक्रिया यौवनावस्था (१२ वर्ष से १६ वर्ष) में चरम सीमा पर होती है और इस अवस्था में 'मनुष्य मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्ण विकसित नहीं होता इसलिए उन्होंने स्त्री और पुरुष के विवाह की आयु उनके पूर्ण रूप से विकसित और मानसिक व शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाने पर निश्चित की।

– अर्थशास्त्र पर आधारित गो-रक्षा

स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में गोधन की रक्षा तथा गोहत्या के विरुद्ध संघर्ष भी बहुत महत्वपूर्ण है। गोधन को स्वामी जी मनुष्य–जाति के लिए बहुत उपयोगी और जीवनदायी

शेष पृष्ठ 6 पर

4 अक्टूबर जन्म दिवस पर विशेष

महान क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

- वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

महान् देशभक्त एवं क्रान्तिकारी शिरोमणि श्यामजी 'कृष्ण वर्मा स्वातन्त्र्य समर के अप्रतिम योद्धा थे। स्वतन्त्रता यज्ञ के लिए उन्होंने अपने आपको समर्पित किया हुआ था। इस याज्ञिक अग्नि का आधान किया था आग्नेय व्रती आग्नेय वस्त्र धारी महर्षि दयानन्द ने। वह स्वाधीनता का सर्वप्रथम उद्घोषक था। उसने ही अपने प्रवचनों तथा लेखन के माध्यम से इस अग्नि को प्रज्ज्वलित किया था। यज्ञ सामान्य अग्नि नहीं, अपितु स्वातन्त्र्य यज्ञ की अग्नि थी जिसमें स्वधीनता के पुजारी स्वेच्छा से आ-आकर अपनी आहुतियां दे रहे थे। महर्षि दयानन्द ने इसका आधान किया तथा क्रान्तिकारियों ने इसमें अपनी आहुतियाँ देकर इसे सर्वव्यापी बनाया, बढ़ाया, चमकाया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी अपना जीवन इस अग्नि को समर्पित कर दिया। श्यामजी महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य थे। महर्षि ने उन्हें विदेश जाने की प्रेरणा दी। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि श्यामजी विदेश में जाकर भारतीय स्वतन्त्रता की अलख जगाएं तथा वहां के कला-कौशल के आधार पर भारतीयों की निर्धनता के निवारणार्थ यत्न करें। महर्षि दयानन्द से श्यामजी की भेंट 1875 ई. में हुई तभी उन्होंने मुम्बई आर्य समाज की सदस्यता भी ग्रहण की जो कि महर्षि के द्वारा स्थापित सर्वप्रथम समाज था। 1883 ई. में महर्षि ने श्यामजी को अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का सदस्य मनोनीत किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर, 1857 को सौराष्ट्र गुजरात प्रदेश के मांडनी ग्राम में श्री कृष्ण जी वर्मा के घर हुआ था। 1875 में उनका विवाह सेठ छबीलदास लल्लू भाई की सुपुत्री भानुमती से हुआ। 1877 में श्याम जी ने समाज सुधार के लिए उत्तरी तथा पश्चिम भारत की यात्राएं की। श्यामजी असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। 5 फुट 10 इंच लम्बा उनका गठीला शरीर तथा तेजस्वी मस्तक सभी को अपनी ओर आकृष्ट करता था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा अप्रतिम विद्वान् थे। संस्कृत साहित्य पर उनका असाधारण अधिकार था। इसके साथ ही उन्हें यूरोपीय संस्कृति तथा साहित्य का भी अच्छा ज्ञान था। वे अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के भी ज्ञाता थे। अपने अगाध ज्ञान के आधार पर श्यामजी कुशल लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनके भाषण तथा लेख तथ्यों से भरपूर होते थे जोकि पाठकों तथा श्रोताओं पर अद्भुत प्रभाव डालते थे। लंदन के ट्राईड पार्क में उनके भाषण से प्रभावित होकर ही मैडम कामा क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गई थी।

श्यामजी के विचारों एवं कार्यों में दृढ़ता एवं स्पष्टता थी, जो उन्हें अपने गुरु महर्षि दयानन्द से सहजरूप में ही प्राप्त थी। विचारों की इसी दृढ़ता तथा स्पष्टता के कारण श्यामजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन का उचित मार्गदर्शन किया। श्यामजी ने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ मुम्बई के समाज सुधार आन्दोलन से किया। माधवदास रघुनाथ दास के द्वारा प्रारम्भ किए गए विधवा विवाह आन्दोलन में श्यामजी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वामी दयानन्द तो उनके प्रेरणा स्रोत थे ही। स्वामी जी के निर्वाण के उपरान्त रूढ़िवादियों को उत्तर देने के लिए श्यामजी ही सक्षम थे। उनकी इसी विशेषता के कारण 1889 में पूना के पण्डितों की चुनौती का सामना करने के लिए जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे ने उन्हें सादर आमन्त्रित किया था।

इसके पश्चात् श्यामजी ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को अपना लक्ष्य बनाया। उनका स्मरणीय कार्य है विदेशों में भी भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष की सुदृढ़ आधारशिला रखना। वहां रहकर उन्होंने इस आन्दोलन को दिग-दिगन्त तक पहुंचा दिया। श्यामजी के विषय में जर्मनी की पत्रिका 'दि जेनाक्रिफ्ट' ने लिखा था कि अंग्रेज श्यामजी कृष्ण वर्मा के आन्दोलन से

उतने ही भयभीत है। जितने कि जर्मनी के द्वारा आक्रमण के भय से।

विदेशों में स्वाधीनता के आन्दोलन को स्थायी रूप देने के लिए श्यामजी ने जुलाई 1905 में लन्दन में 'इण्डिया हाऊस' खरीदा। इण्डिया हाऊस क्रान्तिकारियों का अड्डा था। यही पर स्वतन्त्रता के विषय में गुप्त मन्त्रणाएं होती थीं जिनसे क्रान्ति की चिन्गारी फूटती थी। 1905 में ही श्यामजी ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट, लंगदन' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। स्वाधीनता के विचारों के साथ-साथ इसमें सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के विषय में भी पर्याप्त सामग्री रहती थी। इस पत्र को सुदृढ़ एवं स्थायी करने के लिए 1905 में ही श्यामजी ने 'होमरूल सोसायटी' का गठन भी किया।

क्रान्ति के पक्षधर होने के साथ-साथ श्याम जी यह भी मानते थे कि बहिष्कार या असहयोग के द्वारा भी अंग्रेजी राज्य को निष्प्रभावी बनाया जा सकता था। महात्मा गांधी तो असहयोग आन्दोलन के पक्षधर थे ही। श्यामजी ने भी गांधी जी के नेतृत्व में 1920-21 में चलाए जा रहे असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वाधीनता आन्दोलन को जो कुशल नेतृत्व प्रदान किया इससे राष्ट्रवादियों का क्षेत्र व्यापक होता गया। श्यामजी के प्रचार का जर्मनी प्रभृति यूरोपीय देशों में पर्याप्त प्रभाव पड़ा। वस्तुतः भारतीय राष्ट्रवादियों को जर्मनी का नैतिक तथा सैनिक समर्थन मिलना श्यामजी के प्रचार का ही परिणाम था। विदेशों में श्यामजी को पर्याप्त ख्याति प्राप्त हुई।

श्यामजी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सशक्त विरोध किया। उनके विरोध के कारण ही कई वर्षों तक एंग्लो अमेरिकन सन्धि न हो सकी। श्यामजी निर्भीक होकर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखते थे।

अप्रैल 1912 में उन्होंने एक खुले पत्र में अमेरीकन प्रेजीटेण्ड टैफ्ट को इंग्लैण्ड के साथ सन्धि वार्ता के लिए धिक्कारा था क्योंकि उनकी दृष्टि में इंग्लैण्ड स्वयं दूसरे देशों को गुलाम बनाने वाला डाकुओं का शिरोमणि देश था। इस पत्र से प्रेरणा पाकर ही आयरिश मूल के अमेरिकियों ने ऐंग्लो अमेरीकन सन्धि के विरूद्ध आन्दोलन किया था जिससे वह सन्धिवार्ता विफल हो गई। इस प्रकार श्याम जी का क्षेत्र भारत की स्वतन्त्रता तक ही सीमित न था, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी उनका प्रचुर वर्चस्व था।

1905 में श्यामजी ने भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का लक्ष्य घोषित किया जबकि अन्य लोग औपनिवेशिक राज्य लेने के भी पक्षधर थे। इस सम्बन्ध में श्यामजी ने एक लम्बा लेख भी लिखा था। वे इंग्लैण्ड तथा भारत के सम्बन्ध को भेड़िये तथा भेड़ के सम्बन्ध की तरह देखते थे जिसमें भेड़िया किसी न किसी बहाने से भेड़ के प्राण लेने की सोचता रहता है। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अत्याचारों, आर्थिक, शोषण, राजनीतिक, दुरावस्था तथा नैतिक ह्रास का यथार्थ चित्रण किया। 'वस्तुतः श्यामजी के स्पष्ट चिन्तन तथा लेखनी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा निर्धारित की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उस प्रचार को निरस्त कर दिया जिसके कारण अनेक भारतीय भी अंग्रेजी राज्य के प्रशंसक थे। श्यामजी की स्पष्ट धारणा थी कि भारत के सर्वतोमुखी पतन तथा आर्थिक पिछड़ेपन के लिए अंग्रेजी राज्य ही उत्तरदायी है। इसका समाधान केवल पूर्ण स्वतन्त्रता है। इसके लिए वे असहयोग एवं बहिष्कार को प्रमुख साधन मानते थे।

विदेशों में स्वाधीनता की ज्योति जलाते हुए भारत में भी श्यामजी ने राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। 1885 में रतलाम स्टेट के दीवान बने। 1888 में अजमेर नगर पालिका के अध्यक्ष बने। 1892 में मेवाड़ स्टेट कौंसिल के सदस्य बने तथा 1995 में जूनागढ़ स्टेट के दीवान बने।

1897 में लोकमान्य की गिरफ्तारी पर श्यामजी लंदन चले गए। 1899 में उन्होंने प्रेस स्वतन्त्रता पर जार्ज बर्नार्ड शा का समर्थन किया। 1899 में ही ट्रांसवाला युद्ध में अंग्रेजों के विरूद्ध प्रेजीडेंट क्रूजर का समर्थन किया। 1908 में श्यामजी पेरिस गए। उन्होंने 1909 में हुतात्मा मदन लाल ढींगरा का समर्थन तथा 1911 में हार्डिंग बम विस्फोट पर क्रान्तिकारियों का समर्थन किया। 1914 में उन्होंने जेनेवा के लिए प्रस्थान किया तथा 1919 में गांधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का समर्थन किया।

इस प्रकार अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय स्वाधीनता के लिए समर्पित कर देने वाला भारत माता का यह सपूत 31 मार्च 1930 को चिर निन्द्रा में सो गया। 22 अगस्त 1932 को उनकी धर्मपत्नी भानुमती का भी देहावसान हो गया। श्यामजी की अस्थियां भारत की धरोहर थी। वह भारत को अब प्राप्त हो गयी।

- बी-266 सरस्वती विहार, दिल्ली-34

पितरों का वास्तविक श्राद्ध एवं तर्पण

''जीवितों की सुसेवा''

– आचार्य रामज्ञानी आर्य

आश्विन कृष्ण पक्ष पितृपक्ष कहलाता है। इस पक्ष में पौराणिक वर्ग भोजन व वस्त्र देकर मृतकों के श्राद्ध, तर्पण कर, आत्मतुष्टि का जो स्वांग रचता है, उसके ज्ञान लोचन खोलने के लिए, आवश्यक है कि हम लोग वैदिक दृष्टिकोण की वास्तविकता को समझे। सर्वप्रथम अन्त्येष्टि संस्कार, श्राद्ध एवं तर्पण पर विचार करेंगे। मरने वाला व्यक्ति तो इस संसार से चला गया। वह तो ''यथा कर्म तथा श्रुतम्'' ज्ञान व कर्म के अनुसार मोक्ष की स्थिति को या अन्य किसी योनि को प्राप्त करेगा। परन्तु उसका जो पड़ा हुआ मृत शरीर है, उसको संस्कृत करना होता है। अतः अन्त्येष्टि कर्म उसको कहते हैं। जो शरीर के अन्त का संस्कार है। जिसके आगे उस शरीर के लिए कोई भी संस्कार नहीं है। ''भस्मान्त ग्वम् शरीरम्''।

यजु. 40/15।।

यह स्पष्ट हो चुका है कि दाह कर्म और अस्थि चयन से पृथक मृतक के लिए दूसरा कोई कर्म, कर्तव्य नहीं है। इसलिए दाह कर्म करना की सर्वोत्तम विधि है। श्राद्ध करना चाहिए या नहीं? यह प्रश्न सदैव आता रहता है। ''श्राद्ध'' करना चाहिए। जीवित माता पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, गुरु, आचार्य तथा अन्य वृद्ध जनों, विद्वान लोगों की अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक सेवा करनी चाहिए। इसी का नाम श्राद्ध है। ''पितर'' शब्द का क्या अर्थ है? पितर कौन है? इस पर जरा सोचिए - 'पारक्षणे' धातु से पितर सिद्ध होता है। पितर का अर्थ - पालक, रक्षक और पिता होता है। पिता और पितर ये दोनों समानार्थक हैं। किन्तु जीवित माता-पिता ही रक्षण और पोषण कर सकते हैं। अतः मृतकों की पितर संज्ञा मानना सर्वथा भूल है। क्योंकि रक्षा कार्य मृतकों द्वारा नितांत असम्भव है। पिता और पितर का प्रयोग शास्त्रों में जीवितों के लिए ही आया है। ब्र. पु. में भी बताया गया है कि विद्या देने वाला, अन्न देने वाला जन्मदाता, कन्या देने वाला, भय से रक्षा करने वाला और बड़ा भाई ये सब पितर कहे जा सकते हैं। जैसे - 'अन्नदाता भयत्राता, पत्नीमातः तथैव च। विद्या दाता जन्म दाता पचैते पितरो नृणाम्। (ब्र. पु. 3/35/47/4/35/57) गीता में भी आया है कि अर्जुन ने युद्ध क्षेत्र में खड़े पितरों और पितामहों को देखा। अ. 1/36।। आगे चलकर अर्जुन ने कहा मैं (युद्ध लड़ने को खड़े हुए) आचार्य, पितर, पुत्र, पितामह, मातुल, श्वसुर, पौत्र आदि को मारना नहीं चाहता। गीता अ. 1/34, 35।। से यह स्पष्ट है कि युद्ध क्षेत्र में लड़ने के लिए खड़े हुए, ये सब जीवित व्यक्ति पितरादि ही थे। ये मृत पितर नहीं थे। सैकड़ो प्रमाण दिए जा सकते हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि शास्त्रों में जीवितों को ही पितर संज्ञा दी गई है। किसी पितर को जमीन में दबा देना या जला देना, पुण्य का काम नहीं है। परन्तु मृतक के शरीर को दबाना या जलाना लोग पुण्य समझते हैं। आत्मा को तो सभी लोग अविनाशी मानते हैं। सब जीव अपना-अपना कर्मफल भोगने के लिए संसार क्षेत्र में आते हैं। जो जैसा करेगा वैसा पायेगा। किए हुए कर्म का फल निश्चित रूप से भोगना पड़ता है। जैसे - ''अवश्यमेव भोक्तव्यकृतं कर्म शुभा शुभम्''। पितर संज्ञा किनको?।। पितर शब्द पितृशब्द का बहुवचनन्त रूप है। अतः ''पान्ति रक्षन्तीति पितरः।'' इस व्युत्पत्यनुसार वे सभी पितर हुए जो हमारी किसी भी प्रकार की रक्षा करने में समर्थ हैं। पितृपक्ष में पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, भवतामही, प्रपितामही, इन तीन पीढ़ी के पितरों का ही श्राद्ध विधान है। क्योंकि इतने ही पितर हमें धर्मोपदेश देकर अधर्माचरण से अथवा धनादि द्वारा भौतिक कष्टों से बचा सकते हैं। इससे अग्रिम पितरों का जीवित रह पाना प्रायः सम्भव नहीं है। पितर, यह मृत वंशजों की कोई रूढ़ि संज्ञा नहीं। जैसा कि आजकल समझा जाता है। बल्कि पुत्र ही आगे चलकर यौवनावस्था पश्चात् पितर कहलाते हैं। इस विषय में 'पुत्रासों यत्र पितरों भवन्ति'।। यजु. 25/22। का यह मन्त्रांश प्रमाण रूपेण द्रष्टव्य है। स्वर्गस्थ वंशज तो इसी रूप में पितर कहे जा सकते हैं, वे हमारे पितर थे। वेदों के अनेकशः मंत्रों में - ''त आगमन्तु त इह श्रुवन्तु अधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्। (यजु. 19/57) पितरः शुन्धध्वम्।। यजु. 19/33 पितर इस यज्ञिय वर्हि पर बैठे, हमें उपदेश दे, हमारी रक्षा करें, भोजनोपरान्त हाथ धोये आदि आदि प्रार्थनाएं की गई है। ये सब जीवित पितर ही कर सकते हैं। अतः जीवितों का ही श्राद्ध किया जाये न कि मरे हुए का। यही वैदिक परम्परा है। सम्भवतः तभी ये हमारे वृद्ध जीवित पितर जो पदार्थ जो आसानी से खा सकते हैं। जैसे खीर, पूड़ी, भात, मक्खन आदि कोमल पदार्थ देने की परम्परा आज भी चल रही है।

श्राद्ध क्या है? आइए! इस पर विचार करें 'श्रत'' सत्य का नाम है। एवं श्रत्सत्यं दद्याति यथा क्रियय सा श्रद्धा। श्रद्धया यत क्रियते तत् ''श्राद्धम''।। अर्थात् जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाये, उसको और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम श्राद्ध है जैसा कि मैंने पहले बतलाया पितर का अर्थ रक्षा करने वाला। रक्षा जीवित कर सकता है। मृतक नहीं। ''तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन ततर्पम्''। जिस कर्म से विद्यमान माता पितादि प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जायें - उसका नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितों के लिए है और उन्हीं के लिए सम्भव है। मृतकों के लिए नहीं। शास्त्रों में गृहस्थों के लिए पञ्चमहायज्ञ दैनिक कार्य बताते गये हैं। उनमें से एक पितृयज्ञ है। जो विद्वान, आचार्य, पितर माता पिता आदि, वृद्ध और ज्ञानियों की सेवा एवं सत्कार को ही कहते हैं। परन्तु सेवा सत्कार जीवित का होता है। मृतक का नहीं। वेद, शास्त्र, उपनिषद, गीता, महाभारतादि सभी धर्म ग्रन्थों में पुनर्जन्म के अनेक प्रमाण हैं। और इससे सम्बन्धित कई सत्य घटनाएं प्रकाश में भी आ चुकी है। गीता अ. 2 श्लोक 22 में लिखा है कि जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र धारण करता है। उसी प्रकार यह जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़कर दूसरे नये शरीर को धारण करता है। इसी प्रकार महाभारत वन पर्व अ. 183 में आया है कि आयु पूरी होने पर जीव इस जर्जर स्थूल शरीर का त्याग करके उसी क्षण किसी दूसरी योनि (शरीर) में प्रकट होता है। अस्तु! जीव एक शरीर का त्याग करके तुरन्त दूसरे शरीर में प्रविष्ट हो जाता है तो फिर मृत माता पितादि पितृपक्ष में भोजन करने कैसे आ सकते हैं? यदि कहिए कि आते हैं तो पितृपक्ष में लाखों घरों में लोगों को मरना चाहिए क्योंकि जब तक नये शरीर व घर को छोड़ेंगे नहीं, तब तक पुराने घर में जीमनें कैसे आयेंगे। दूसरी योनि में रहकर भी पूर्वजन्म के माता पितादि को भोजन नहीं पहुंच सकता। क्योंकि एक तो यह पता नहीं रहता कि किसके माता पितादि कहां जन्म लिए हैं। और दूसरे एक का खाया हुआ भोजन दूसरे के पेट में नहीं जाता। अतः उनके (माता पितादि) निमित्त ब्राह्मणों एवं कौवों को खिलाने से उन्हें भोजन कदापि नहीं पहुंच सकता। विश्व में जितने महापुरुष हुए हैं उनमें से अद्वितीय समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती एक थे। उनके विचार आज भी प्रासंगिक एवं ग्राह्यय हैं। वर्तमान समय में ढोंग, पाखण्ड अन्धविश्वास एवं रूढ़िवादी परम्पराएं चतुर्दिक छाई हुई है। आर्य समाज के प्रवर्त्तक दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त सतीप्रथा, दहेज, बालविवाह, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, पिण्डदान एवं तर्पण आदि जैसी कुप्रथाओं के प्रतिकूल अपना एक अद्वितीय आन्दोलन छेड़ा था। आइए, विचारिये तथा ''सत्यमेव जयते नानृतम्'' के उद्घोष को उजागर करिये। ''सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए''।

- आर्य समाज लार टाउन, देवरिया (उ. प्र.)

पृष्ठ–4 का शेष

स्वामी दयानन्द का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

मानते थे। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने गोधन के अर्थशास्त्र को समझाया। यह भी उनके समाज–सुधार का एक वैज्ञानिक आधार ही था जिसमें उन्होंने साधारण मनुष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एक सन्तुलित समाज के विकास का मार्ग बनाया। यह उस समय का एक आवश्यक सुधार–क्षेत्र था जिसमें समाज की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अपने संसाधानों को सुरक्षित रखने और विकसित करने के लिए प्रेरित करना आपश्यक था।

– समग्र सुधार का आह्वान

स्वामी दयानन्द के चिन्तन और कार्यों में सतत गतिशीलता तथा प्रगतिशील विचारधारा स्पष्टरूप से दिखाई देती है। धार्मिक क्षेत्र व सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ उन्होंने राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपने समाकालीन समाज–सुधारकों की तुलना में अधिक प्रगतिशील विचार दिये। धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाना तो उनका लक्ष्य था ही, स्वदेश की हीन अवस्था से भी वे पूरी तरह परिचित थे। उनकी यह धारणा बन चुकी थी कि अंग्रेजी शासन में प्रचलित न्याय–प्रणाली दोषपूर्ण है। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्राचीन काल में प्रचलित पंचायत–प्रणाली, जिसमें ग्राम को इकाई मानकर वहां निवासियों के आपसी वाद–विवादों को मिल बैठकर सुलझा लिया जाता है, ग्राम–पंचायत–व्यवस्था भारत जैसे ग्रामीण प्रधान देश के लिए अनुकूल है। ब्रिटिश राज्य की समाप्ति के पश्चात् भारत में स्थानीय स्तर पर जो पंचायत राज्य स्थापित किया गया उसका आधार वही प्राचीन पंचायत राज्य प्रणाली है जिसे स्वामी जी भारतीय स्थानीय स्वशासन के लिए उचित मानते थे। यह स्वामी दयानन्द का भारतीय समाज के विषय में गहन चिन्तन का प्रतीक है और भारतीय समाज की परिस्थितियों का एक वैज्ञानिक मूल्यांकन। संक्षेप में, महर्षि दयानन्द की विचारधारा एक प्रगतिशील विचारधारा थी और वे सत्य के अन्वेषक थे। उनका दृष्टिकोण व्यापक था, वे जीवन और समाज की पूर्ण व्याख्या करना चाहते थे और अपनी विचार क्रान्ति में सबको साथ लेकर चलना उनका ध्येय था, यही समाज–सुधार में महत्वपूर्ण तथा वैज्ञानिक तथ्य हैं जो स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में प्रमुख थे। अन्त में डॉ० सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा उद्धृत ये शब्द स्वामी जी के व्यक्तित्व व वैज्ञानिक सोच को और अधिक स्पष्ट करते हैं– ''यदि कोई दयानन्द के दृष्टिकोण को समझले तो यदि वह ईसाई है तो और भी अधिक अच्छा और ईमानदार ईसाई बन सकता है; हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू बन सकता है; जैन, मुसलमान, सिक्ख, पारसी है तो अच्छा जैन, मुसलमान, सिक्ख और पारसी बन सकता है; यदि वह राजनीतिक और राष्ट्रवादी है तो दयानन्द के दृष्टिकोण को समझ लेने पर वह अपने क्षेत्र में अच्छा कार्यकर्त्ता बन सकता है, यदि वह समाजवादी और साम्यवादी है तो वह अच्छा समाजवादी या साम्यवादी बन सकता है; ब्राह्मण अच्छा ब्राह्मण, शूद्र अच्छा शूद्र बन सकता है।''

सन्दर्भ ग्रन्थः–

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, पण्डित लेखराम, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

२. नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती, डॉ० भवानीलाल भारतीय, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।

३. सत्यार्थप्रकाश; स्वामी दयानन्द सरस्वती; वैदिक मन्त्रलय; अजमेर।

४. महर्षि दयानन्द; इन्द्र विद्यावाचस्पति; सुबोध पब्लिकेशन; नई दिल्ली।

५. आर्य मान्यतायें; कृष्ण चन्द्र गर्ग; आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

एम.टी.एच.-७, विश्वविद्यालय परिसर,

आर्य समाज की गतिविधियाँ

धर्मरूपी धन ही मरणोपरान्त साथ जायेगा

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी महोत्सव के अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य अर्जुनदेव वर्णी के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन यज्ञ किया गया तथा वैदिक भजनोपदेशक श्री ऋषिपाल पथिक के मधुर भजन होते रहे। वेद प्रचार सप्ताह के रात्रिकालीन अंतिम समापन सत्र में विद्वानों ने कहा योगीराज योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि शांति के सभी सम्भव उपाय जब विफल हो जायें तो नीति, अनीति, राजनीति, कूटनीति सभी तरह से यानि साम, दाम, दण्ड, भेद से दुश्मन को मार देना न्याय है, धर्म है, सदाचार है अत्याचारी को दण्ड न देने से समाज का सुधार नहीं होगा। हम अन्याय के पक्षधर बने रहते है यही हमारी हार का कारण है। योगीराज श्रीकृष्ण जी के जीवन में अविद्या नाम की चीज नहीं थी। शत्रुओं को मार डालो षष्ठे षाष्ठे समाचरेत दुष्ट के साथ दुष्टता बरतो। धर्मरूपी धन ही मरणोपरान्त साथ जायेगा। जो व्यक्ति को सुपथ की ओर ले जाए उनकी हर चेष्टा हमारे लिए अनुकरणीय है। उपासना से जो फल मिलता है उतना बल और कहीं नहीं मिलता। अत्याचारी परिणाम को नहीं देखता। धर्म का कभी नाश नहीं होना चाहिए। धर्म के अनुकूल चलना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भुल्लन सिंह ने की। मंच संचालन राजवीर सिंह वर्मा ने किया और सभी अतिथियों, विद्वानों व श्रद्धालुओं का धन्यवाद किया और अपेक्षा की कि भविष्य में भी इसी प्रकार से उनका अमूल्य सहयोग मिलता रहेगा एवं सभी सहयोगियों का जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कार्यक्रम में सहयोग दिया है उनका आभार व्यक्त किया। तत्पश्चात् शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समारोह में श्री ओम प्रकाश आर्य, देवा आर्य, सुधीर कुमार, मनीराम सैनी, सविता रानी, रश्मि गर्ग, नरेन्द्र गर्ग, मूलचन्द, राजकुमार, सुरेश सेठी, अनिल मारवाह, रमेश राजा, रविकांत राणा, बारूराम शर्मा, डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री, रोशनलाल, राधेश्याम, मूलचन्द यादव आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

- मंत्री, आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर,
मो.:-9358320222

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

उदयपुर : आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से दिनांक 23 से 30 अगस्त , 2015 तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। महायज्ञ के ब्रह्मा सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। आर्य कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस (उ. प्र.) की अधिष्ठाता डॉ. पवित्रा ब्रह्मचारिणियाँ विपाशा आर्या, सोनम, मनीषा, ललितेश आर्या द्वारा सस्वर वेद पाठ एवं भजन प्रस्तुत किये गया। सायं सत्रों में श्री इन्द्रदेव पीयूष ने भी भजन प्रस्तुत किया।

प्रतिदिन यज्ञोपरान्त सत्संग सभा में यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री ने वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रंथों के उद्धरण देते हुए उपदेश दिये। आपने कहा कि हमारा जीवन यज्ञमय एवं परोपकारी होना चाहिए। वेद केवल एक समाज, धर्म अथवा मजहब के ग्रंथ नहीं है किन्तु संसार को संचालित करने के लिए दिया ईश्वरीय ज्ञान है। जीवन में कभी स्वाध्याय एवं सत्संग से प्रमाद न करें। सत्संग एवं ईश्वर आराधना से जीवन का मार्जन होता है। जैसे मकान, बर्तनों को नियमित साफ करते हैं वैसे ही जीवन को स्वच्छ एवं निर्मल रखने के लिए नियमित सत्संग एवं ईश्वर आराधना करनी चाहिए। डॉ. पवित्रा जी ने ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, स्वरूप को व्याख्यायीत करते हुए कहा कि परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार पक्षपात रहित सबको अपने कर्मों के अनुसार निष्पक्ष फल प्रदान करता है। परमात्मा का स्वभाव अविनाशी है। परमात्मा की आज्ञा का पालन करना ही धर्म है।

पारायण यज्ञ प्रातः सायं कालीन कुल पन्द्रह सत्रों में साठ प्रमुख यजमानों के अतिरिक्त पूर्णाहुति के दिन उपस्थित सभी

यज्ञप्रेमी बन्धुओं और मातृशक्ति ने आहुतियाँ प्रदान की। सभी सत्रों में यज्ञोपरान्त सम्पन्न धर्मसभा में कोटा विश्वविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वर्तमान एवं पूर्व कुलपति मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के अनेकों आचार्य, प्रोफेसर, इंजीनियर्स प्राध्यापक आदि प्रमुख, विशिष्ट अतिथि रहें। आर्य समाज हिरण मगरी की संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने यज्ञ आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई और समापन सत्र में आर्य समाज हिरण मगरी की गतिविधियों एवं इतिहास पर प्रकाश डाला। संयोजिका डॉ. श्रीमती शारदा गुप्ता, उपप्रधान अनन्त देव शर्मा, उपमंत्री मुकेश पाठक, कोषाध्यक्ष प्रेम नारायण जायवाल, रामदयाल, दिनेश अग्रवाल, विनोद कोहली आदि ने अतिथियों का स्वागत किया एवं मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने धन्यवाद दिया। सत्र की अध्यक्षता समाज के प्रधान भंवर लाल आर्य ने की। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- रामदयाल, प्रचार मंत्री

स्वर्गीय स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धा सुमन

सुमेधा पाकर जो आनन्दित थे वे जन-गण-मन को भाये थे।
स्वप्न साकार करूं ऋषिवर का मूल मन्त्र वे पाये थे।
यों तो जीते हैं जग में सब, उपकार किया किसने कितना?
उपकार का साकार रूप धर, श्री सुमेधानन्द जी आये थे।
है धन्य धरा भारत माता जो सुमेधानन्द उपजाती है।
आर्य राष्ट्र निर्माण करो प्रतिपल हमको समझाती है।
हे आर्यजनों! तुम एक बनो, वेदों का मूर्त विवेक बनो।
ऋषियों के पदचिन्हों पर चलकर मांनव से तुम देव बनो।
जब आर्य एक नहीं होंगे, पाखण्ड दलन होगा कैसे?
हम जीवित हैं या मरे हुए, प्रमाण मिले जग को कैसे?
ऋषिवर के ऋण को चुकाने हित श्री सुमेधानन्द जी आये थे।
जो करना था, कर चले गये, समझो! समझाने आये थे।।
क्या करूं? मैं कहां जाऊँ? कौन आर्यों को एक करेगा?
इस धरती तल की विषम पीड़ा को तुम ही बताओ कौन हरेगा?
सकल जगत को आर्य बनाओ, इसको कौन साकार करेगा?
कौन है माई का लाल? जो काम से, नाम सुमेधानन्द धरेगा?
श्रद्धा सुमन हैं भेट तुम्हें, हे सुमेधानन्द महाराज अहो।
मानव जीवन था धन्य किया, अब सच्चिदानन्द की शरण गहो।
जो काम अधूरा छोड़ गये, उसको अब पूर्ण करेंगे हम।
नहीं शिथिलता आने पायेगी, यह याद रहेगा हमको हरदम।।

-धर्मदेव शास्त्री, शाजापुर (म. प्र.), मो.:-7509509204

वेद प्रचार सप्ताह समारोह का आयोजन

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) द्वारा वेद प्रचार का कार्यक्रम 5 से 11 अक्टूबर, 2015 तक धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ पं. कर्मवीर शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर रात्रि 7.30 से 9.30 बजे तक भजन एवं प्रवचन के कार्यक्रम होंगे। आर्य महिला सम्मेलन सायं 5 से 7.30 बजे तक श्री सुशीला भगत की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी शोभानन्द, आचार्य श्री रामानन्द जी शिमला वाले पं. कर्मवीर शास्त्री तथा दिनेश दत्त जी पधार रहे हैं। 11 अक्टूबर को समापन समारोह के अवसर पर यज्ञ की पूर्णाहुति तथा वेद सम्मेलन एवं भजन तथा प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

- सुरेन्द्र कुमार टण्डन, मंत्री

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, नोएडा-33 में श्रावणी महोत्सव चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार-23 अगस्त 2015 में हर्षोल्लास से संपन्न

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सत्संग सभा
धर्म मुक्ति का मार्ग है - डॉ. अशोक आर्य

उदयपुर : आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य में सत्संग सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. अशोक आर्य ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि ''धर्म की गति अति सूक्ष्म है। धर्म कभी बंधन में नहीं बांधता, अपितु मुक्त करता है। श्रीकृष्ण हमेशा राष्ट्र मानव धर्म के पक्ष में खड़े रहे। अधर्म का प्रतिकार करते हुए धर्म की स्थापना की।'' मुख्य वक्ता के रूप में श्री सत्य प्रिय शास्त्री ने श्री कृष्ण को विश्व का सबसे चर्चित व्यक्तित्व बताया। उन्होंने कहा कि ''श्री कृष्ण मन, वचन, कर्म तीनों से एकमत रहे व जीवन में कभी धर्ममार्ग से विचलित नहीं हुए।'' वर्तमान में श्रीकृष्ण के माखनचोर आदि विकृत स्वरूप पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि संसार के सामने श्रीकृष्ण के सच्चे स्वरूप को बताने की आवश्यकता है।

पूर्व में पंडित रामदयाल जी के पौरोहित्य में पर्व का विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। डॉ. अमृत लाल तापडिया, श्रीमती विमला तापडिया, श्रीमती चन्द्रकांता यादव, श्रीकृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती चन्द्र कला आर्य यजमान थे। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। श्रीमती राधा त्रिवेदी ने भजन प्रस्तुत किया। आर्य समाज की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने स्वागत एवं प्रधान श्री भंवर लाल आर्य ने आभार व्यक्त किया।

- रामदयाल, प्रचार मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये
(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)
भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 2–3 अक्टूबर, 2015
प्रकाशन की तिथि : 1 अक्टूबर, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
1 से 7 अक्टूबर, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वैश्वानर देव !

स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन्।।

—ऋ० ६/६/३

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः।। देवता—वैश्वानरः।। छन्दः—प्रस्तारपंक्ति।।

विनय—मैं नहीं जानता कि जो संसाररूपी वस्त्र बुना जा रहा है उसका ताना क्या है, बाना क्या है और जब कभी बुनते हुए इसका कोई तन्तु टूट जाता है तो उसे जोड़ने वाला कौन है। हाँ, वह वैश्वानर अग्नि अवश्य जानता है। वह ही इस संसार रूपी वस्त्र के लिए ताना तनना और बाना भरना जानता है। वह अग्नि ऋक् (ज्ञान) के ताने में यजुः (कर्म) का बाना डालता हुआ इस महायज्ञ के वस्त्र को निरन्तर बुन रहा है और यही समय–समय पर किसी ज्ञानतन्तु के विच्छिन्न होने पर नया ज्ञान देने द्वारा, वक्तव्य के बोलने द्वारा, उसे जोड़ता रहता है।

यह वैश्वानर अग्नि कौन है? यह वह अग्नि है जो इस विश्व–शरीर का अग्नि है, जो असंख्य व्यष्टि (वैयक्तिक) अग्नियों को समष्टि (सामूहिक) अग्नि से एक करने वाला है, अतएव जो व्यक्तियों के मरते रहने पर भी अमर रहने वाला है, जो अमरत्व का रक्षक 'अमृतस्य गोपा' है। यह अग्नि इस सब संसार को ज्ञान, चैतन्य, स्फूर्ति दे रहा है। यह अपने व्यष्टिरूप से जहां नीचे पृथिवी पर पैर बनकर विचर रहा है, वहां यह अपने समष्टिरूप से ऊपर द्युलोक में नेत्र होकर सबको देख रहा है। भाईयो ! क्या तुमने 'वैश्वानर अग्नि' को पहचाना? यह वह अग्नि है जिसमें या जिसके द्वारा यह संसार रूपी महान् यज्ञ हो रहा है।

शब्दार्थ—**सः**=वह वैश्वानर अग्नि **इत्**=ही **तन्तुम्**=ताना तनने को और **सः**=वही **ओतुम्**=बाना भरने को **विजानाति**=जानता है, **सः**=वह **ऋतुथा**=समय–समय पर **वक्त्वानि**=वक्तव्य ज्ञानों को भी **वदाति**=बोलता है, प्रकाशित करता है। **यः**=जो (वैश्वानर अग्नि) **अमृतस्य गोपाः**=अमरत्व का रक्षक हो **अवः**=इधर नीचे **चरन्**=चलता हुआ और **परः**=ऊपर–ऊपर **अन्येन**=अपने दूसरे रूप से **पश्यन्**=देखता हुआ **ईम्**=इस संसार को **चिकेतत्**=जान रहा है, इसमें ज्ञान–चैतन्य दे रहा है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पुस्तक समीक्षा

पौराणिक समाज में फैली अवैदिक परम्पराओं में मृत्यु के उपरान्त दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु 'गरुड़ पुराण'' की कथा का प्रचलन आम हो गया है। पुराणों के जाल में हिन्दू समाज इस कदर उलझ गया है कि वेदादि शास्त्रों के प्रति उसकी रुचि, विश्वास और श्रद्धा निरन्तर ह्रास को प्राप्त हो रही है और जीवन अवैदिक औपचारिकताओं के बोझ के नीचे दबता चला जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक ''शाश्वत जीवन'' जिसने एक अनमोल निधि के रूप में आकार लिया है और हिन्दू समाज में व्याप्त आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास की पोल खोलकर रख दी है।

''शाश्वत जीवन'' का आद्योपान्त अवलोकन करने के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि एक मिथ्या अवधारणा के विकल्प में तथा वेदादि शास्त्रों के आलोक में लिखी गई यह पुस्तक असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने में पूर्ण समर्थ है तथा रूढ़ियों, आडम्बरों और अन्धविश्वासों के रूप में जो केंचुली हमारी प्राचीन परम्परा, ज्ञान और विज्ञान को ढंके हुए है उस केंचुली को विद्वान लेखक ने उतार फेंका है। अनेक अन्य वैदिक ग्रन्थों के उद्धरण प्रस्तुत कर तथा अनेकों मनीषियों के प्रवचनों का सार देकर ''गरूड़ पुराण'' परलोक का सत्य नहीं है सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है।

सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. लक्ष्मणदास आर्य के स्वाध्याय प्रेमी विद्वान पिताश्री स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती जी (मूलचन्द्र आर्य) ने अपने जीवन काल में इस पुस्तक का प्रणयन किया था जो किन्हीं कारणों से उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो सकी थी। लेकिन उनके सुयोग्य सुपुत्र जो कि अत्यन्त निष्ठावान कर्मठ, जुझारू, जागरूक और सक्रिय आर्य समाजी है के विशेष प्रयासों से इस पुस्तक का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कराया है। इस समाजोपयोगी पुस्तक को सामने लाने में उनका प्रयास प्रशंसनीय है अतः उन्हें साधुवाद देता हूँ। बहुरंगी आवरण में 184 पृष्ठ की ''शाश्वत जीवन'' नामक पुस्तक जो अत्यन्त अल्प मूल्य मात्र 100/- रुपयें में प्राप्त होगी, आत्मविद्या के जिज्ञासुओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी तथा समाज को उन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लायेगी ऐसी आशा करता हूँ।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

1. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

2. डॉ. लक्ष्मण दास आर्य, लक्ष्मण रेडियो, स्टेशन रोड, जिला-अशोक नगर-473331 (मध्य प्रदेश)
मो.: 9425133481

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।